February 2021

Monthly Magazine
Year 7 Issue 2

Satyug

नारायण रेकी सतसंग परिवार

In Giving We Believe

सत्युग

हमारा उद्देश्य

"हर इंसान तन, मन, धन व संबंधों से स्वस्थ हो
हर घर में सुख, शांति समृद्धि हो व
हर व्यक्ति उन्नति, प्रगति व सफलता प्राप्त करे।"

वुधवार सतसंग

प्रत्येक वुधवार प्रात ११ वजे से ११.३० वजे तक

फेसवुक लाइव पर

सतसंग में भाग लेने के लिए नारायण रेकी सतसंग परिवार के फेसवुक पेज को ज्वाइन करें और सतसंग का आनंद लें।

नारायण गीत

नारायण-नारायण का उद्घोष जहाँ
राम राम मधुर धुन वहाँ
सबको खुशियाँ देता अपरम्पार,
जीवन में लाता सबके जो बहार
खोले, उन्नति, प्रगति, सफलता के द्वार,
बनाता सतयुग सा संसार
वो है, वो है हमारा नारायण रेकी सतसंग परिवार
हमारा एन.आर.एस.पी., प्यारा एन.आर.एस.पी.
प्यार, आदर, विश्वास बढ़ाता
रिश्तों को मजबूत बनाता, मजबूत बनाता
परोपकार का भाव जगाता
सच्चाई, नम्रता सेवा में विश्वास बढ़ाता
सत को करता अंगीकार
बनाता सतयुग सा संसार
वो है, वो है हमारा नारायण रेकी सतसंग परिवार
मुस्कान के राज बताता,
तन, मन, धन से देना सिखलाता
हमको जीना सिखलाता
घर-घर प्रेम के दीप जलाता
मन क्रम से जो हम देते वही लौटकर आता, वही लौटकर आता
बनाता सतयुग सा संसार
वो है, वो है हमारा नारायण रेकी सतसंग परिवार
एन.आर.एस.पी.,एन.आर.एस.पी.

॥ 卐 ॥

पावन वाणी

प्रिय नारायण प्रेमियों,

।।नारायण नारायण।।

नारायण रेकी सतसंग परिवार कुछ सिद्दांतों का दृढ़ता से पालन करता है । उनमें से एक सिद्दांत है हर पल, हर क्षण प्रशंसा के भाव में जीना । प्रकृति से हमें जो कुछ मिला है उसे आभार के साथ स्वीकार करना और प्रशंसा के भाव से ओतप्रोत रहना । प्रशंसा उस ईश्वर की जिसने इस ब्रहमाण्ड को बनाया । एक -एक कण को जोड़ा और और अद्भुत प्रकृति की संरचना कर दी । सराहना उस परम पिता की जिसने हमें बनाया ।सराहना प्रकृति के उस भाव की जिसने हाड माँस के पुतले में जान फूँक कुदरत को सबसे बेहतरीन तोहफा दिया । कितनी सुंदर साँसें दीं जो एक रिद्दम पर चलती हुई एक अद्भुत संगीत का संचार करती हैं । कितनी सुंदर दृष्टि दी जो हमें इस प्रकृति की सुन्दरता को दिखाती है । कितनी सुंदर बुद्धि दी, जो इस सुन्दरता को सराहने का भाव पैदा करती है । कितनी सुंदर वाणी दी जो शब्दों के माध्यम से प्रेम, दर्शाती है । कितने सुंदर और बहुमूल्य हाथ पैर दिए जिनके माध्यम से हम बुद्धि के माध्यम से जन्मे सेवा कार्यों को अंजाम देते हैं । कितने सुंदर रिश्ते दिए जिन्होंने जीवन को जीने की वजह दी । कितनी सुंदर पेड़ पौधे वनस्पतियाँ, कल- कल करती जीवनदायनी नदियाँ दीं। झर- झर करते झरने दिए, सागर दिए । सब कुछ अद्भुत, अविश्वसनीय, अतुलनीय । जिस ओर दृष्टि जाती है मन प्रशंसा के भाव से सराहना के भाव से भर जाता है ।

सराहना का भाव एक ऐसा अद्भुत भाव है जो हमारे जीवन को सार्थकता प्रदान करता है । जब हम सराहना के भाव से भरे होते हैं तो आदर का भाव पनपता है, आदर का भाव पनपता है तो प्रेम पनपता है प्रेम पनपता है तो सकारात्मकता पनपती है और जब जीवन सकारात्मकता से भरा होता है जीवन सप्त सितारा हो जाता है । आप सब सप्तसितारा जीवन जीएं यह कामना भी और यह चाहना भी ।

शेष कुशल

R. Modi

नारायण नारायण

प्रिय सतसंगियों,

राज दीदी का प्रातः प्रेयर्स का समय ४.३० से ५.३० है। आप भी अपने- अपने घरों में इन वीडियो के साथ प्रार्थना कर दीदी के साथ प्रार्थना का लाभ उठा सकते हैं ।

१) दिव्य प्रर्थनाएँ : You tube link - https://youtu.be/L3lfy-vWTto

-: संपादिका :-

संध्या गुप्ता

09820122502

-: प्रधान कार्यालय :-

राजस्थानी मं डल कार्या लय

बेसमेंट रजनीगं धा बिल्डिं ग, कृ ष्ण वाटिका मार्ग ,

गोकुल धाम, गोरेगां व (ई), मुं बई - ४०० ०६३.

-: क्षेत्रीय कार्यालय :-

अहमदाबाद	जैविनी शाह	:	9712945552
आगरा	अंजनामित्तल	:	9368028590
अकोला	रिया / शोभा अग्रवाल	:	9075322783/ 9423102461
अमरावती	तरुलता अग्रवाल	:	9422855590
बैंगलोर	शुभांगी अग्रवाल	:	9341402211
बैंगलोर	कनिष्का पोद्दार	:	7045589451
बड़ोदा	दीपा अग्रवाल	:	9327784837
भंडारा	गीता शारडा	:	9371323367
भीलवाड़ा	रेखा चौधरी	:	8947036241
बस्ती	पूनम गाड़िया	:	9839582411
भोपाल	रेनूगट्टानी	:	9826377979
बीना (मध्यप्रदेश)	रश्मि हुरकट	:	9425425421
बनारस	अनीता भालोटिया	:	9918388543
दिल्ली (पश्चिम)	रेनू विज	:	9899277422
दिल्ली (पूर्व)	मीनू कौशल	:	9717650598
दिल्ली (प्रीतमपुरा	मेघा गुप्ता	:	9968696600
धुले	कल्पना चौरोडिया	:	9421822478
डिब्रूगढ	निर्मलाकेडिया	:	8454875517
धनबाद	विनीता दुधानी	:	9431160611
देवरिया	ज्योति छापरिया	:	7607004420
गुवाहाटी	सरला लाहौटी	:	9435042637
गुडगाँव	शीतल शर्मा	:	9910997047
गोंदिया	पूजा अग्रवाल	:	9326811588
गाजियाबाद	करुणा अग्रवाल	:	9899026607
गोरखपुर	सविता नांगलिया	:	9807099210
हैदराबाद	स्नेहलता केडिया	:	9247819681
हरियाणा	चन्द्रकला अग्रवाल	:	9992724450
हींगन घाट	शीतल टिबरेवाल	:	9423431068
इंदौर	धनश्री शिरालकर	:	9324799502
इचलकरंजी	जयप्रकाश गोयनका	:	9422043578
जयपुर	सुनीता शर्मा	:	9828405616
जयपुर	प्रीती शर्मा	:	7877339275
जालना	रजनी अग्रवाल	:	8888882666
झुंझुनू	पुष्पा टिबरेवाल	:	9694966254
जलगाँव	कला अग्रवाल	:	9325038277
कानपुर	नीलम अग्रवाल	:	9956359597
खामगांव	प्रदीप गरोदिया	:	8149738686
कोल्हापुर	जयप्रकाश गोयनका	:	9422043578
कोलकत्ता	सी .एसंगीता चांडक	:	9330701290
कोलकत्ता	श्वेता केडिया	:	9831543533
मालेगांव	आरती चौधरी/रेखा गरोडिया		9673519641/ 9595659042
मोरबी (गुजरात)	कल्पना जोशी	:	8469927279
नागपुर	सुधा अग्रवाल	:	9373101818
नांदेड	चंदा काबरा	:	9422415436
नासिक	सुनीता अग्रवाल	:	9892344435
नवलगढ़	ममता सिंगरोडिया	:	9460844144
पिछौरा	स्मिता मुकेश भरतिया	:	9420068183
परतवाडा	राखी अग्रवाल	:	9763263911
पूना	आभा चौधरी	:	9373161261
पटना	अरबिंद कुमार	:	9422126725
पुरुलिया	मृदु राठी	:	9434012619
रायपुर	अदिति अग्रवाल	:	7898588999
रांची	आनंद चौधरी	:	9431115477
रामगढ़	पूर्वी अग्रवाल	:	9661515156
राउरकेला	उमा देवी अग्रवाल	:	9776890000
शोलापुर	सुवर्णा बल्दावा	:	9561414443
सूरत	रंजना गाडिया	:	9328199171
सीकर	सुषमा अक्षवाल	:	9320066700
सिलीगुड़ी	आकांक्षा मुंधडा	:	9564025556
विशाखापत्तनम	मंजू गुप्ता	:	9848936660
उदयपुर	गुणवंती गोयल	:	9223563020
विजयवाड़ा	किरण झंवर	:	9703933740
वर्धा	अन्नपूर्णा	:	9975388399
यवतमाल	वंदना सूचक	:	9325218899

संपादकीय

।। 卐 ।।

प्रिय पाठकों,

।। नारायण नारायण ।।

नए साल की पहली सुबह थी । नए साल पर यह नियम लिया था कि शाम के साथ- साथ में सुबह भी वाक पर जाऊँगी। प्रातः का ५.४५ का समय था । सूर्य देवता अभी भी निशा के आँचल में छिपे हुए थे । जूते पहनकर बड़े ही उत्साह से में घर से बाहर आई । शीत ऋतु की मद्दम- मद्दम बयार पर नाचते छोटे- बड़े पौधे एक अनोखे सुकून का अहसास करा रहे थे । लैम्प पोस्ट से आती श्वेत चमकीली रोशनी काली स्याही सी निरंतर लहराती सड़क अद्भुत सौन्दर्य का परिचय दे रही थी । मैंने अचानक पतिदेव से कहा, 'आज कितना सुंदर लग रहा है न यह सड़क, यह रोशनी, यह झूमते पौधे' । पतिदेव बोले, 'यह आज ही नहीं हर रोज ही इतने सुंदर लगते हैं बस जीवन की आपाधापी में हम इन्हें सराहना भूल जाते हैं' । कहकर वह मुस्कराए। अचानक मुझे अहसास हुआ कि कितनी सत्य है यह बात की जो बहुमूल्य जीवन हमें मिला है उसे हम अकसर सराहना भूल जाते हैं। मन ही मन एक प्राण लिया बहुमूल्य जीवन में जो - जो मिला है उसको सराहने की एक आदत विकसित करूँगी ।

तो पाठकों, हम और आप फरवरी के सतयुग के इस अंक में यह जानेंगे और समझेंगे कि जीवन को कैसे सरहाया जाए ?

शुभकामनाओं सहित,

आपकी अपनी

संध्या गुप्ता

अंतरर्राष्ट्रीय कार्यालय :

नेपाल	रिचा केडिया	977985-1132261
आस्ट्रेलिया	रंजना मोदी	61470045681
बैंकाक	गायत्री अग्रवाल	66897604198
कनाडा	पूजा आनंद	14168547020
दुबई	विमला पोद्दार	971528371106
शारजहा	शिल्पा मांजरे	971501752655
जकार्ता	अपेक्षा जोगनी	9324889800
लन्दन	सी.ए. अक्षता अग्रवाल	447828015548
सिंगापुर	पूजा गुप्ता	6591454445
डबलिनओहियो अमेरिका	स्नेह नारायण अग्रवाल	1-614-787-3341

आपके विचार सकारात्मक सोच पर आधारित आपके लेख, काव्य संग्रह आमंत्रित है - सतयुग को साकार करने के लिये/आपके विचार हमारे लिये मूल्यवान हैं । आप हमारी कोशिश को आगे बढ़ाने में हमारी मदद कर सकते है । अपने विचार उदगार, काव्य लेखन हमें पत्र द्वारा, ई-मेल द्वारा भेज सकते हैं ।
हमारा ई-मेल है 2014satyug@gmail.com

we are on net

narayanreikisatsangparivar   @narayanreiki

प्रकाशक : नारायण रेकी सतसंग परिवार

मुद्रक : श्रीरंग प्रिन्टर्स प्रा. लि. मुंबई.

Call : 022-67847777

मनुष्य जीवन हमारे लाखों योनियों में किए गए अच्छे कर्मों पर प्रभु की कृपा का परिणाम है। मनुष्य जन्म के लिए देवता भी तरसते हैं। हमें जिन्हें यह दुर्लभ जन्म मिला है, हम उसके प्रति कृतज्ञ तो अवश्य होते हैं पर छोटी- छोटी बातों पर झींकते हैं। अपने शिकायती स्वभाव के कारण हम अपने बहुमूल्य जीवन और जीवन में मिले बेशकीमती उपहारों को अपना हक़, समझ नकारते रहते हैं। व्यक्तियों, वस्तुओं, भावनाओं, परिस्थितियों को नकारने का हमारा यह स्वभाव हमें खूबसूरत जीवन का आनंद नहीं लेने देता।

कल्पना कीजिए वो क्षण जब आपने इस संसार में अपनी पहली बार आँखें खोली थीं। माँ के गर्भ में उलटे लटके जीवन जीने के बाद खुली हवा में सीधे सांस लेते आप, आती जाती हर सांस क्या खूबसूरत नहीं लगी थी आपको ? आपका वह पहला रुदन क्या खुशी के अश्रु नहीं थे ? खुली हवा में खुलकर अपने पूर अस्तित्व के साथ जीने की खुशी.... वह ही तो पहला पल था, जीवन को समझने और उसके अस्तित्व को सराहने का। जीवन की पहली सांस याद कीजिए अपनी माँ का स्नेह से भरा वह कोमल आँचल, याद कीजिए गीली शैया पर सोती आपकी माता और सूखे बिछोने पर चैन से सोते आप। माँ की छाती से बहती अमृत की बूँदें जो आपने निर्बल से शरीर को आहिस्ते- आहिस्ते विकसित करती रहीं। स्वतः ही श्रध्दा से माँ की सराहना में झुक नहीं जाता क्या यह शीश ? याद कीजिए अपने पिता का वो मजबूत कांधा जिसपर बैठकर आप स्वयं को पूरी दुनिया में सबसे अमीर मानते थे। एक मातपिता ही तो हैं जिनकी हर एक साँस इसलिए चली कि आप एक सर्वोत्तम जीवन जी सकें। अच्छा भोजन, अच्छे कपड़े, अच्छे जूते, अच्छे संस्कार, अच्छे विचार सब कुछ सिर्फ अच्छा और क्योंकि आप बेहतरीन जीवन जी सकें। एक मातापिता ही तो हैं जिन्होंने हमेशा चाहा कि आप उनसे भी आगे निकल जाएँ। परिवार का एक - एक सदस्य, कहानियां सुनाती दादी माँ, बगीचे में खेल खिलाते दादाजी, लाढ लड़ाते चाचा और बुआ, जीवन के रण में प्रेम, सहयोग, परवाह, आदर, सम्मान का पाठ पढ़ाता आपका परिवार। अगर यह सब न होते तो क्या आप आज वो होते जो आज आप हैं ? क्या मन नहीं हो रहा इनकी सराहना का ? पाठशाला के शिक्षक, वहाँ गैरों में अपने बने आपके मित्र जो कभी आपकी उपलब्धियों पर खुश हुए कभी आपसे गलतियों पर झगडे, कुछ आपसे आगे निकल गए, कुछ आपसे पीछे रह गए पर हर कोई आपके जीवन को खट्ठी मीठी यादों के अनमोल खजाने से भर गए क्या अकसर इन यादों को सराहने का दिल नहीं करता ?

खाने को उत्तम भोजन, पीने का शीतल जल, क्या कभी मन नहीं करता इस धरा को, वनस्पतियों को, इन पेड़ पौधों को, फलों से लदी टहनियों, को माँ के द्वारा परोसी गई भोजन की थाली को, मटके के जल को, इन नदियों को, झीलों, को सागर को, सराहें ? करता है न फिर क्यों नहीं सराहते ? क्यों पानी गन्दा हो रहा है, खाने में यह कम है, वो अच्छा नहीं बना इत्यादि- इत्यादि बातें करके अपने भीतर छिपे प्रशंसा के भावों को खोखली शिकायतों के पीछे छिपा देते हैं।

क्या किसी बेघर को देख अपने छोटे से ही सही पर प्यार के मजबूत सहारे से खड़े आशियाने को सराहने के लिए स्वतः ही मन मचल - मचल नहीं जाता ? कल तक जिस घर की दीवारें रंगत उड़ी जगह - जगह से उधड़ा प्लास्टर आपको क्रोध दिलाता था, बैचैन करता था किसी अमीर व्यक्ति के घर से अपने घर की तुलना एक बैचैनी, एक खीज उत्पन्न करती थी वह ही खीज फुटपात पर सोए बेघर को देख अपने जीवन को सराहने के लिए उद्दत नहीं हो जाते ? सहसा उस परम पिता के आगे सिर नहीं झुक जाता ? जीवन एक उत्सव नहीं लगने लगता ? तो फिर उस क्षण ही क्यों? हर पल हम जीवन को क्यों नहीं सराहा सकते ? न जाने कितने हैं जिनके लिए हमारा जीवन एक सपना है और न जाने कितने हैं जिनका जीवन हमारे लिए सपना है पर सपने तभी पूरे होते हैं जब हम उन सपनों के लिए प्रशंसा का भाव रखें, आदर का भाव रखें। प्रशंसा का भाव, आदर का भाव, आभार का भाव,जीवन में प्रचुरता के दरवाजे खोलता है। आपको जीवन में जो कुछ भी हासिल है उसे सराहें, हर रिश्ते को, हर भाव को, हर चीज को हर परिस्थिति को सराहने का और आभार का

भाव रखें और देखें जीवन कैसे एक सुमधुर गीत बन जाता है ।

प्रशंसा और सराहना एक आदत है स्वभाव है जिसे बड़ी ही आसानी से हम अपने भीतर विकसित कर सकते हैं आवश्यकता है तो बस एक बात की और वह है अपने नजरिये को बदलने की । दीदी कहती हैं, **'नज़र बदलिए नज़ारे बदल जाएंगे, दृष्टिकोण बदलिए दृश्य बदल जाएंगे ।'** एक बार जीवन को सराहने की आदत तो डालिए देखिए जीवन कैसे बदलता है । धीमी- धीमी बहती पवन, झूम -झूम कर नाचते पेड़ पौधे, खुशबू बिखेरते पुष्प, कल- कल बहती नदियाँ, जीवन में आने वाला हर व्यक्ति, जीवन में होनेवाली हर घटना को एक बार सरहाने की आदत डाल लेंगे आपके कंठ से निकलने वाला हर एक शब्द स्वतः ही सराहना और प्रशंसा बन जाएगा । अब प्रश्न यह आता है है कि सराहना की यह आदत कैसे विकसित करें ? कुछ छोटे- छोटे परिवर्तन अपने भीतर करें और सराहना को जीवन में सहज ही उतरते देखें:-

१) सुबह उठते ही अपनी चलती साँसों की सराहना करें जो आपको जीवन का एक और दिन दिखा रहीं हैं । अगर आज यह सांस न चल रही होती तो क्या आज का दिन देख पाते आप? आहिस्ते से सांस को भरते हुए धन्वाद करें उस परम शक्ति का ।

२) हर छोटी बड़ी चीज को सराहें जो आपके जीवन को आसान बना रही है ।

३) बड़ो को चरण स्पर्श और छोटों को स्नेह दें । यह बातें आपको अपने रिश्तों को सराहना सिखाएंगे ।

४) हँसी ठाहकों के साथ - साथ मतभेदों की भी सराहना करें क्योंकि यह ही तो जो आपको, अपने विचारों, को उचित राह प्रदान करते हैं ।

५) सूरज की रोशनी और चाँद की शीतलता को महसूस करें । प्रकृति से नजदीकियां बनाएं ।

६) जीवन में आगे बढ़ने के लिए अपने से ऊपर देखना आवश्यक है तो जीवन में संतोष और आनद के लिए उन लोगों के जीवन को देखना भी जरुरी है जो आपसे कमतर, सुविधाओं और विपरीत परिस्थितियों में जी रहे हैं ।

७) अपने रिश्तों से असंतुष्ट हैं तो उनकी ओर देखें जिनके पास रिश्ते हैं ही नहीं, संबंधों के सराहना का भाव अपने आप ही प्रस्फुटित हो जाएगा ।

८) अपने प्रति, अपने गुणों के प्रति, अपने भावों के प्रति सम्मान के भाव से भरें, सम्मान का यह भाव सराहना के भाव को सहज ही विकसित कर देगा।

९) दीदी द्वारा सिखाई गई प्रार्थना की यह पंक्तियाँ याद रखें, हम कृपशाली हैं, हम भाग्यशाली हैं, हम पर नारायण की असीम कृपा है, असीम कृपा है, असीम कृपा है । यह ऐसे चमत्कारिक शब्द हैं जो आपके भीतर इस बात को भीतर से उतार देते हैं कि जीवन बहुमूल्य है जिसे सराहना ही सर्वोत्तम है ।

१०) सदैव याद रखें आपका जीवन इतना बेशकीमती यह सर्वश्रेष्ठ योनि देवताओं के लिए भी दुर्लभ है, पर कृपा है उस परम पिता की कि हमको सहज ही मिल गया है जब आप हर पल, हर क्षण यह याद रखेंगे तो हृदय के भावों से सिर्फ और सिर्फ सराहना के ही शब्द निकलेंगे ।

रेशमा हेड़ा को जन्मदिन (२ फरवरी) पर सुख,शांति,समृद्धि,उन्नति, प्रगति,सेहत,सफलता से भरे सप्त सितारा जीवन का नारायण आशीर्वाद ।

जीवन में आतंरिक शांति कैसे पाएं इन उपायों को बताते हुए दीदी ने कहाः-

१) अपने जीवन में कड़ी मेहनत और ईमानदारी को अपनाएं।

२) अपने आप को एक माध्यम के रूप में देखें, कर्ता, ईश्वर है।

३) हर जीव में नारायण को देखें, ईश्वर के सामने आत्मसमर्पण करें और सांसारिक कर्तव्यों को करते हुए भी ईश्वर स्मरण करते रहें।

४) ईश्वर ने अपनी बनाई हुई इस दुनिया को चलाने के लिए हमें माध्यम के रूप में चुना है। ईश्वर स्वयं कर्ता है, और हमारा मार्गदर्शक है, हम उसके द्वारा चुने गए माध्यम हैं।

५) हम तो महज एक साधन है जिसका जरूरत पड़ने पर वो उपयोग करता है किसी की मदद करने के लिए।

६) यदि आप किसी के लिए अच्छे बनते हैं, अच्छा है लेकिन यदि आप किसी के लिए कुछ अच्छा करके भूल जाते हैं वो सबसे अच्छा है। बजाय अपने किये काम का एहसान जताने के भीतर से यह एहसास करें कि जो कार्य अच्छा हुआ है वह अच्छा होना ही था क्योंकि ईश्वर ने आपको माध्यम बनाया था उसे अच्छा करने के लिए।

७) किसी भी कार्य को करने के लिए हम तो महज एक माध्यम है जो भी अच्छा कार्य हमसे होता है वह उसकी कृपा से होता है। यह भाव आते ही आपके भीतर विनम्रता बढ़ती चली जायेगी। दूसरा व्यक्ति भी एहसान के बोझ के तले नहीं दबेगा।

८) जब आप कभी किसी की मदद करते हैं, तो वह बदले में किसी की मदद करेगा। एक दूसरे की मदद करने की श्रृंखला को आगे बढ़ाते रहें । जब आप अच्छा काम करना जारी रखेंगे, तो जब आपको सबसे ज्यादा ज़रूरत होगी वह आपको बहुगुणित होकर वापस मिलेगा।

९) जो भी कुछ भी उपलब्ध है उसमें से हमेशा दूसरों को देने और मदद करने के लिए प्रेरित हों। जब से हम पैदा हुए हैं हम समाज से सब कुछ ले ही ले रहे हैं, हमें स्वार्थी नहीं होना चाहिए। हमें इसे वापस करना चाहिए। हमें 'मुझे और मेरे परिवार' की अवधारणा से ऊपर उठना चाहिए। सभी धर्म दान को बढ़ावा देते हैं। इसके पीछे क्या रहस्य है .. हमारे बुजुर्गों ने भी हमें दान देने के लिए प्रेरित किया।

१०) जब आप दान देते हैं, तो आपको एहसास होता है कि आपके पास धन की प्रचुरता है, जब यह एहसास विश्वास में परिवर्तित होता है तो आप बहुतायत को आकर्षित करते हैं।

११) जब आप कुछ देते हैं तो यह कई गुना मल्टीप्ल हो कर आता है। नारायण शास्त्र के अनुसार यदि आप एक देते हैं तो यह ११ गुना अधिक मल्टीप्ल होकर आता है।

१२) कुछ धर्मों का मानना है कि आप (कण दे और मण पाएं) जब आप देते हैं, तो आपको अच्छा लगता है।

१३) आप संतुष्ट महसूस करते हैं कि जब किसी को आपकी मदद की जरूरत थी तो आप उसकी मदद करने के लिए वहाँ थे, भले ही वह आपके लिए एक अजनबी था।

१४) आप खुशी महसूस करते हैं क्योंकि आपकी मेहनत की कमाई अच्छे काम के लिए उपयोग की जाती है।

१५) आत्मविश्वास और इच्छा शक्ति में क्या अंतर है?।

अहंकार ± आत्मविश्वास मिलकर ओवर कॉन्फिडेंस को जन्म देते हैं।

आत्मविश्वास में बढ़ोत्तरी इच्छाशक्ति है। जब आप किसी को कुछ देते हैं जिससे आप अच्छा महसूस करते हैं तो आपके चेहरे पर मुस्कान आती है। आपका आत्मविश्वास बढ़ता है और इससे आपकी इच्छा शक्ति मजबूत होती है।

१६) 'फील गुड तरंगों' में असाध्य रोगों को ठीक करने की शक्ति है।

जब ये सुखद तरंगे आपके शरीर से बाहर निकलती हैं तो वे आपके जीवन में अच्छी चीजों और अच्छे लोगों को आकर्षित करती हैं। जैसे व्यायाम मांसपेशियों को मजबूत बनाता है। इच्छा शक्ति हमारी मानसिक मांसपेशियों को मजबूत बनाती है।

१७)जब आप किसी के चेहरे पर मुस्कान लाने का कारण बनते हैं, तो आपके आत्मविश्वास में सुधार होता है और आपकी शक्ति और ऊर्जा के स्तर में सुधार होता है।

१८) दीदी ने देने की आदत को बढ़ाने के लिए एक सुंदर और सरल विधि साझा की। दीदी ने कहा कि हमें हमेशा सिक्कों का एक पाउच रखना चाहिए और सब्जी विक्रेताओं, रिक्शा चालकों, किराना वालों को इसे शुभकामनाएं और प्रचुरता के आशीर्वाद के साथ देना चाहिए

१९) खुशहाल व्यक्ति की खुशहाली का राज है सभी के लिए उसके द्वारा की जानी वाली प्रार्थनाएं । जब हम प्रार्थना करते हैं तो हमें ब्रह्मांड से कई गुना आशीर्वाद प्राप्त होता है।

२०) शास्त्र कहता है 'अतिथि देवो भवः'सबसे पहले अतिथि आपके धन और स्थिति से प्रभावित नहीं होते हैं, वे आपकी मुस्कान और गर्मजोशी से किए गए स्वागत से प्रभावित होते हैं।

२१) नारायण शास्त्र कहता है कि अतिथि को आप जिस भाव से देखते हैं, जिस चाव से देखते हैं, वैसी ही बरकत आपके घर में होती है। यदि आप अतिथि को देव के रूप में देखते हैं, तो आपके घर की सुख शांति समृद्धि में बढ़ोत्तरी होती है और यदि अनावश्यक के रूप में देखते हैं तो वैसी ही व्यवस्था हो जाती है।

नारायण के आशीर्वाद और नारायण शक्ति से रंजीता मालपानी को प्रति माह ५६ करोड़ का जैकपॉट कमाने का दिव्य आशीर्वाद ।

संतोष लड्ढा को जन्मदिन (८ फरवरी) को जन्मदिन पर सुख,शांति,समृद्धि,उन्नति, प्रगति,सफलता भरे सप्त सितारा जीवन का नारायण आशीर्वाद ।

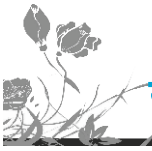

युवा मंच

एकमात्र ग्रह जहाँ जीवन पाया जाता है वह है पृथ्वी और हम मानव भाग्यशाली हैं जो हमें इस ग्रह पर जन्म मिला व इसकी बहुतायत को अनुभव करने का अवसर मिला। जीवन विभिन्न रूपों में मौजूद है और ब्रह्मांड की प्रत्येक इकाई महत्वपूर्ण है और हर रूप सराहने योग्य है जैसे पृथ्वी, हवा, पानी, अंतरिक्ष, बादल, जानवरों और पौधे। यह सूची अंतहीन है और इकॉलजी के अनुसार हमारा अस्तित्व एक दूसरे पर निर्भर करता है। इस तथ्य के अनुसार, हमें प्रत्येक जीवन की कदर और सराहना करनी चाहिए जो हम अपने जीवन में आशीष के रूप में मिले हैं। प्रशंसा एक ऐसा गुण है जो सकारात्मकता पैदा करने में महत्वपूर्ण है। आइए हम एक छोटे बच्चे का उदाहरण लेते हैं।

आपने एक शिशु को कदम उठाने की कोशिश करते हुए अवश्य देखा होगा । जब हम बच्चे के प्रयासों पर ताली बजाते हैं और सराहना करते हैं, तो वह उत्साहित हो पुनः कोशिश करता है।

मनुष्य ही नहीं, अचर भी प्रशंसा पसंद करते हैं। हाल ही में ऑस्ट्रेलिया से एक महिला द्वारा शेयरिंग की गयी जिसने साँझा किया कि वह अपनी कार से अक्सर कहती - आप मेरी सबसे अच्छी साथी हैं, मैं आपको प्यार करती हूँ और आप हमेशा मेरे साथ रहते हैं । एक बार कार दुर्घटना ग्रस्त होने के कारण उसने कार के बीमा वसूली की अर्जी लगायी तो उसे एक ऐसी राशि मिली जो कार के मूल्य से दोगुनी थी और उस पर भी बीमा कंपनी ने उस कार को उसी के पास छोड़ दिया। कार की मरम्मत कराकर वह महिला आज भी इसका उपयोग कर रही है। प्रशंसा दोनों ही व्यक्तियों में अच्छा एहसास कराने वाले हार्मोन का प्रवाह बढ़ाती है। ऐसा करते समय, जब उस व्यक्ति के अच्छे गुणों को हाइलाइट किया जाता है तो यह बर्ताव स्वतः ही उस व्यक्ति के अन्य क्षेत्रों में भी सुधार को आकर्षित करता है!

उदाहरण के लिए - कंपनियों के कर्मचारियों को उनके उत्तम कार्य निष्पादन के लिए दिए जाने वाले प्रदर्शन पुरस्कार (परफारमेंस अवार्ड) सराहना के तरीके हैं जो कर्मचारियों को बेहतर प्रदर्शन करने और बेहतर परिणाम देने के लिए प्रेरित करते है।

सराहना में ब्रह्मांड के हर परमाणु की सकारात्मक ऊर्जा को जागृत करने की क्षमता है, इसलिए हमें हर छोटी से छोटी चीज़ की सराहना करनी चाहिए जो हमें आशीर्वाद स्वरूप मिली है।

उस व्यक्ति से पूछें, आंखों का मूल्य, जो देख नहीं सकता,
उस व्यक्ति से पूँछे , कान का मूल्य, जो सुन नहीं सकता,
उस व्यक्ति से पूँछें, वाणी का मूल्य, जो बोल नहीं सकता,
उस व्यक्ति से पूँछें, घर का मूल्य, जिसके पास कोई आश्रय नहीं है,
उस व्यक्ति से पूँछें, पानी का मूल्य, जो रेगिस्तान में रहता है,
उस व्यक्ति से पूँछें, परिवार का मूल्य, जो अनाथ है। हम वास्तव में भाग्यशाली हैं कि हमें अच्छी सेहत, धन, आनंदमय सामंजस्यपूर्ण रिश्तों, अद्भुत परिवार, चारों और बिखरी शानदार नैसर्गिक सुंदरता और मिलता है एक नया दिन जो हमें बहुतायत का आनंद लेने और सराहना करने के अवसर प्रदान करता है।

वोल्टायर कहते हैं - 'प्रशंसा में एक अद्भुत बात है, यह दूसरों के साथ हमें भी उत्कृष्ट बनाती है।'

बच्चों की फुलवारी

सुधार एक अनातार्निहीत मानवीय गुण है । सुधार का यह गुण उस समय दिखाई देता हैं जब कोई चुनौतीपूर्ण स्थिति उत्पन्न होती है ।

बारिश होने पर असुविधा होती है । यदि गीष्मकाल अधिक लम्बा हो जाता तो पानी की कमी हो जाती है और गर्मी को दूर करने के तरीकों पर विचार करना पड़ता है । वर्षा जल संचयन(वाटर हार्वेस्टिंग) तकनीक के द्वारा अतिरिक्त वर्षा जल का संचय किया जाता है । गैर ऊर्जा स्त्रोतों के लिए सौर ऊर्जा और पवन ऊर्जा का दोहन किया जाता है । ऐसा इसलिए संभव हो सका है क्योंकि मनुष्य ने परिस्थितियों को अपनाया और जीवन सुधार के लिए इन तकनीकों को सराहा और अपनाया। सतयुग का इस बार का अंक **'यूँ सराहें जीवन को'** विषय पर पाठकों, दिशा देने के लिए है । लॉक डाउन के इस समय ने हमें आशावादी और सकारात्मक रहना सिखाया है हमने देखा की सकारात्मकता की वजह से ही अनेकों लोग इस वायरस से जूझ सके और इससे बाहर आ सके । सकारात्मक व्यवहार की वजह से ही लोग आर्थिक चुनौतियों का सामना कर सके और एक विजेता की तरह नए बिजनेस आयडिया के साथ उभरे ।

राज दीदी कहती हैं, 'जीवन आपके सामने जो भी परिस्थिति लाता है यदि हम स्थिति को स्वीकार कर लेते हैं और उस माध्यम की सराहना करते हैं और बुद्धिमता से उसका उपयोग और उपभोग करते हैं तो आप उस परिस्थिति पर बड़ी ही आसानी से विजय प्राप्त कर लेते हैं । वार्तमान की स्थिति में, ज़ूम, गूगल, और माइक्रोसाफ्ट द्वारा प्रारंभ की गई सुविधाओं ने लोगों को एक दूसरे के करीब ला दिया है । यद्धपि हम शारीरिक तौर पर एकदूसरे से नहीं से नहीं मिल रहे हैं पर हम असल में हम कक्षाओं में उपस्थित हो रहे हैं ऑफिसों में उपस्थित हो रहे हैं इतना ही नहीं सतसंग भी हो रहे हैं और लाखों लोग एक दूसरे से जुड़ रहे हैं । रामायण में लिखा है, 'ईश्वर के हर विधान में मंगल विधान है' । गीता कहती है, जो हुआ अच्छा हुआ और जो होगा अच्छा होगा' । जब ऐसा है है तो फिर क्यों न हर उस चीज की सरहाना करें जो हमें प्राप्त है और जीवन के सर्वोच्च लक्ष्य को प्राप्त करें।

बतौर स्पार्कलिंग स्टार्स अब जबकि परीक्षाएं नजदीक हैं ऑन लाइन कक्षाओं की कमियाँ ढूँढने के बजाय स्कूल के पदाधिकारियों की प्रशंसा करें जिन्होंने ऐसी विषम परिस्थिति में भी ऑन लाइन क्लासेज के माध्यम सेआपकी पढ़ाई प्रारंभ रखी है।

आभार और मुस्कान दो ऐसे गहने हैं जो आपको अपने लक्ष्यों को की और ले जाएंगे।

आइए, हमें जो बहुमूल्य जीवन मिला है उसे सराहें' ।

दीदी के छाँव तले

नारायण रेकी सतसंग परिवार के मा ध्यम से राज दीदी ने सतसंगियों को नारायण रेकी और प्रार्थना के ऐसे माध्यम दिए हैं जो सहज ही सबके जीवन को सरल बनाते जा रहे हैं। ऐसे ही कुछ अनुभवः-

राजेश शाह (कनाडा):- मैं कनाडा में रहता हूँ । एक रेकी चैनल हूँ और नियमित नारायण रेकी का अभ्यास करता हूँ । अभी पिछले दिनों हमारा जैक पॉट लगा । राज दीदी से ज़ूम मीटिंग पर मिलना हुआ । ज़ूम मीटिंग से पहले ऑय प्रेशर अधिक होने के कारण मेरी आँखें बहुत लाल हो गईं थीं । दीदी ने ज़ूम मीटिंग में स्वास्थ्य की प्रार्थना कराई । जब मीटिंग समाप्त हुई तो मेरे आश्चर्य का ठिकाना न रहा मेरी आँखें जो पहले लाल थीं अब पूरी तरह नार्मल थीं । प्रार्थनाओं का इतना इनेस्टेंट परिणाम ने मेरी नारायण रेकी प्रार्थनाओं में मेरे विश्वास को और अधिक प्रबल कर दिया । राज दीदी का रोम- रोम से धन्यवाद ।

स्वीटी (नेपाल) :- मैं नेपाल से हूँ । नियमित प्रार्थना और नारायण रेकी हीलिंग करती हूँ । एक दिन मैं शापिंग के लिए गई । मैं अपने बहुत ही कीमती धूप के चश्मे को किसी दुकान पर भूल आई । पर यह बात मुझे पता नहीं था ।हफ्ते भर बाद जब मैं पुनः उस दुकान पर गई तो उस दुकानदार ने मुझे मेरे चश्मे लौटा दिए । मेरे इतनी कीमती चश्मे मुझे नारायण की कृपा से वापस मिल गए । मेरा यह प्रबल विश्वास है कि नारायण हर पल आपके साथ हैं और हर क्षण आपकी रक्षा करते हैं ।

पूर्वी दलाल :- मैं एक रेकी चैनल हूँ । मेरी माँ फ्रेक्चर के कारण टोटल बेड रेस्ट पर थीं । मैंने फलीभूत करें प्रार्थनाओं सकारात्मक वाक्य लिया और बोन और अन्य सिंबल से उन्हें रेकी देनी आरम्भ की । मुम्बई सेण्टर पर भी उनकी प्रेयर हो रही था । हमारी लगातार प्रार्थनाओं का यह प्रभाव हुआ कि मेरी मम्मी की रिकवरी बहुत ही अच्छी हुई । हमने प्रार्थनाओं में जो डेट डाली थी उस डेट तक मम्मी पूर्तः स्वस्थ हो अपने आप बिना सहारे के चलने लगीं । नारायण धन्यवाद । राज दीदी धन्यवाद ।

मंदीप (दिल्ली):- मैंने अभी हाल में ही नारायण रेकी सीखी है । उसमें एक सिंबल है नारायण कवच जिसका प्रयोग किसी भी चीज को सेफ़ और सिक्योर करने के लिए किया जाता है । मैं एक दिन बाजार गई तो मैंने अपने पर्स पर नारायण कवच बनाया । मैंने ऑय ड्राप खरीदा जो १४३ का था पर दुकानदार ने मुझे वह डिस्काउंट के साथ सिर्फ २५ रूपये में दे दिया । जब में हेयर स्प्रे खरीदने पहुँची तो उसकी कीमत ४०० रूपये थी पर दुकान पर ५०% की सेल चल रही थी और मुझे वह स्प्रे २०० रुपयों में मिल गया। अपने धन की सुरक्षा के लिए इतना सटीक सिंबल देने के लिए राज दीदी का कोटि- कोटि धन्यवाद ।

कुसुम

आज कालेज का प्रथम दिन था । सभी युवा बड़े ही उत्साहित थे । तभी कक्षा में प्रोफ़ेसर ने प्रवेश किया और आपसी अभिवादन के बाद हमारे सामने एक गजब की बात रखी । उन्होंने कहा, पूरी कक्षा में आपको एक ऐसे व्यक्ति के साथ परिचय करना है जिसे आप पहले से नहीं जानते । अभी मैं, किसी अनजान व्यक्ति से परिचय करने के लिए दृष्टि घुमा ही रहा था कि तभी एक कोमल हाथ ने मेरे कंधे को छुआ । मैं पीछे की ओर मुड़ा और एकदम चौंक गया बी. कॉम की क्लास जिसमें ज्यादातर लोग मेरे हमउम्र थे यह यह ८० के लगभग की बुजुर्ग महिला यहाँ क्या कर रही है । उसकी चौड़ी आत्मविश्वास से भरी मुस्कान ने मेरे पूरे अस्तित्व को हिला दिया । उसने उत्साह से कहा, 'हाय! मेरा नाम कुसुम है, क्या मैं तुमको गले लगा सकती हूँ'? मैंने एक मुस्कान के साथ कहा, 'बेशक! आप मेरी दादी की उम्र की हैं, आप बेशक मुझे गले लगा सकती हैं!' पर मैं तुम्हारी दादी नहीं! तुम्हारी दोस्त कुसुम हूँ, मुझसे दोस्ती करोगे' ? न जाने कैसी अजीब सी मिठास थी उनकी बातों में, मैंने उनकी दोस्ती का जवाब दोस्ती से देते हुए उन्हें जोर से गले लगा लिया । मैंने मुस्कराते हुए दोस्ताना व्यवहार करते हुए कहा, 'आप इस नाजुक उम्र में कालेज में'?

उन्होंने चुहल करते हुए कहा, 'मैं पढ़ लिख कर अपने लिए एक अमीर पति, और एक शानदार जिंदगी की तलाश में यहाँ आई हूँ ।' 'पढ़ाई के लिए नहीं?' मैं हँसा । वह बोली, 'बी. कॉम करना मेरा सपना था, जिसे मैं पूरा करना चाहती हूँ ।' मैं एक बार फिर चौंका । मुझे उनकी बातों में मजा आने लगा था । कक्षा के बाद हम केंटीन गए वहाँ हमने मिलकर चाकलेट मिल्कशेक पीया हम जल्द ही गहरे दोस्त बन गए ।

कुसुम बिना रुके लगातार बोलती थीं । उनकी बातें इतनी मजेदार होती थीं की मैं उन्हें मन्त्र मुग्ध सुनता जाता । मैंने उनका नाम टाइम मशीन रख दिया था, उनकी सारी बातें और अनुभव दिनांक और सन के साथ शुरू होते थे समय को इतनी अकुरेसी से याद रखना उनका एक विलक्षण गुण था ।

धीरे- धीरे कुसुम अपने मिलनसार, हँसमुख, और सहयोगी स्वभाव के कारण सबकी चहेती बन गई । जब कभी कोई प्रोफ़ेसर कक्षा में अनुपस्थित रहता, या हमारे पास अतिरिक्त समय होता सभी छात्र कुसुम को घेर कर बैठ जाते और घंटो उनकी बातों से अपना ज्ञान बढ़ाते और जी खोलकर हँसते । कभी हम उनकी टांग खींचते तो कभी वह हमारी । हमारे और उनके बीच का उम्र का एक लम्बा फासला था जो मिट चुका था हम सिर्फ दोस्त थे अच्छे दोस्त । एक दिन उन्होंने एकाउंट्स के प्रोफ़ेसर की क्लास बंक कर 'दिल वाले दुल्हनिया' ले जाएंगे मूवी का प्रोग्राम बनाया और हम सबको फिल्म दिखाने ले गई । जब सामूहिक बंक की वजह प्रोफ़ेसर को पता चली तो उन्होंने पूरी कक्षा के सामने कुसुम से जवाब तलब किया । कुसुम बड़ी ही मासूम सी शक्ल लेकर सिर झुकाए खडी थीं । उनकी मासूमियत पर हमारी ही नहीं प्रोफ़ेसर की भी हँसी फूट पड़ी । परीक्षा में वह कई बार नक़ल के लिए पर्चियां बना कर लातीं, पकडे जाने पर बड़ी मासूमियत से कहतीं बी. काम की परीक्षा में ही तो चीटिंग कर सकती हूँ प्रोफ़ेसर जिंदगी की परीक्षा में तो अव्वल हूँ ना?' देखते- देखते सत्र पूरा हो गया । हमारे कालेज में हर

सत्र की समाप्ति पर 'हमारे मन की' नाम का कार्यक्रम रखा जाता था जिसमें छात्र स्टेज पर आकर अपने मन की बात कहते थे ।

उस दिन कुसुम गिरती पड़ती स्टेज पर आई । हाई हील और उसपर पहनी गई काली वन पीस ड्रेस गजब ढा रही थी । आते ही वह बोलीं, 'सॉरी मेकअप करने में थोड़ा समय लग गया।' पूरा हाल हँसी के ठहाकों से गूँज गया । उन्होंने अपना गला साफ़ किया और गंभीर सुर में बोलना शुरू किया, ' दोस्तों, हम बूढ़े नहीं होते हमारा शरीर बूढा होता है जानते हैं क्यों? क्योंकि हम जबरदस्ती उम्र के अंकों को अपने ऊपर ओढ़कर हंसना भूल जाते हैं । जीना भूल जाते हैं । खिलखिलाना भूल जाते हैं, नाचना गाना भूल जाते हैं अपनी जिम्मेदारियों को हम खुशी से निभाते हुए भी स्वयं को इतना गंभीर बना लेते हैं कि हमारी इच्छाएं, हमारा स्वाभाविक स्वभाव कहीं गुम जाता है । लोग क्या कहेंगे, लोग क्या सोचेंगे? हमारी यह सोच हमें कृत्रिम बना देती है । हम जीते हुए भी प्रतिपल स्वयं अपने वजूद को मारते चले जाते हैं । आप किस उम्र पर क्या करोगे यह विश्व के किस शास्त्र में लिखा है ? हमारा जीवन है जिसे हम अपने मुताबिक़ जीने के लिए स्वतन्त्र हैं । स्वतंत्रता हमेशा प्रगति की ओर ले जाती, है खुशहाली की ओर ले जाती है अनुशासन की और ले जाती है । कोई भी किसी भी ऊंचाई को हासिल कर सकता बस वहाँ तक पहुँचने की चाह होनी चाहिए । मरते समय लोगों को अपनी उपलब्धियों की खुशी से ज्यादा उन सब बातों की ग्लानि होती है जो वह अपने खूबसूरत और दुर्लभ जीवन में करना चाहते थे पर नहीं कर पाए । जीवन की अंतिम सांस जीवन को सराहते हुए लेनी चाहिए न की ग्लानि से भरी हुई ।

पूरा हाल जो चुपचाप कुसुम को सुन रहा था तालियों की गडगडाहट से भर गया।

कुसुम ने परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की थी । गेजुएशन के एक सप्ताह के बाद कुसुम एक रात चिर निद्रा में सो गई ।

कालेज का एक - एक विद्यार्थी और एक - एक प्रोफ़ेसर की आँखें नम थी । कुसुम जीवन के नए मायने सबको समझा गई थी ।

वो आदमी

एक बार की बात है, एक आदमी तो जो स्वभाव से बहुत ही दयालु और मददगार था । एक दिन वह सड़क पर जा रहा तभी उसे रास्ते में एक पर्स पड़ा हुआ दिखाई दिया । उसने पर्स उठाया और देखा कि वह खाली था। किसी लुटेरे ने सारे रूपये निकाल कर खाली पर्स सड़क पर फेंक दिया था । अचानक एक पुलिस वाले के साथ एक महिला आई और रोते हुए बोले, 'प्लीज मेरे रूपये लौटा दो मैंने बड़ी मेहनत से अपने बेटे की स्कूल की फीस के लिए जमा किए थे।' पुलिस वाले ने भी उस महिला को धमकाते हुए कहा कि वह उस महिला के पैसे लौटा दे। न जाने उस आदमी को क्या सूझा उसने अपनी जेब में रखे सारे पैसे उस महिला को लौटा दिए । रूपये लेकर जब वह महिला अपने घर पहुँचीं तो उसने देखा कि जितने पैसे खोए थे ये रूपये उन रुपयों से दुगुने थे । उसकी खुशी का ठिकाना न रहा । अगले दिन वह महिला जब अपने बेटे की फीस जमा करने जा रही थी तो उसने देखा

एक चादर ओढ़े एक आदमी उसके पीछे आ रहा है । वह महिला डर गई । उसे लगा कि पिछले दिन की भांति शायद कोई लुटेरा फिर से उसके पैसे लूटने के लिए उसके पीछे पड़ा हुआ है । डर से उसने चौराहे पर खड़े पुलिसकर्मी से उस आदमी की शिकायत की । पुलिसकर्मी ने जैसे ही उस आदमी की ओर हाथ बढ़ाया तो उस आदमी का चादर गिर पड़ा । उसकी शक्ल देख पुलिसकर्मी और वह महिला चौंकी। जब पुलिसकर्मी ने उससे पूछा कि वह उस महिला के पीछे क्यों आ रहा था ? तो उस व्यक्ति ने कहा, मैंने कल रूपयों के लिए इनकी विवशता देखी, मैं नहीं चाहता था कि कल की तरह कहीं कोई लुटेरा इनके पैसे न लूट ले । स्त्री उस आदमी के सामने नतमस्तक हो गई । वह समझ चुकी थी कि कल उसे जो पैसे उस आदमी ने लौटाएं थे वो उस आदमी के खुद के पैसे थे जो उसने उस औरत की विवशता देखकर दयावश, इंसानियत के नाते लौटा दिए थे । स्त्री की आँखों से अविरल अश्रु बह रहे थे ।

जीवन आपको अजीब अनुभव देता है । कभी- कभी यह आपको गंभीर झटके भी देता है और कभी- कभी यह आपको आश्चर्यचकित भी कर देता है। हम अपने गुस्से और हताशा में अकसर गलत निर्णय या गलतियाँ कर बैठते हैं । जब भी मौका मिले अपनी गलतियाँ सुधारें। अहसानों को वापस करें दयालु और उदार बनें । आपको जो भी मिला है उसकी सरहाना करना सीखें ।

कार्मिक हीलिंग कुछ परिवर्तन का साथ कार्मिक हीलिंग इस तरह करें :-

बाएं हाथ से

' हे नारायण आपका धन्यवाद है आप हर पल हर क्षण हमारे साथ हैं' ,

आपकी उपस्थिति में मैं/हम उन लोगों के लिए जाप करने जा रहा/रही हूँ जिन्हें भी मैंने/हमने जाने अनजाने नकारात्मक विचार , वाणी व्यवहार से आहत किया है। हम उनसे क्षमा चाहते हैं , साथ ही जिन्होंने हमारे साथ भी विचार, वाणी व्यवहार से नकारात्मक व्यवहार किया है उन व्यक्तियों को हम क्षमा करते हैं। हम नारायण से प्रार्थना करते हैं उनका जीवन - सुख , शांति , समृद्धि , लव , रेस्पेक्ट, फ़ेथ , केयर , नेम , फ़ेम, मनी , उन्नति , प्रगति , सफलता से भर दीजिए व उनकी सभी शुभ मनोकामनाएँ पूरी कर दीजिए।

दाएँ हाथ से

नारायण से प्रार्थना करें जिन भी लोगों से हम आज सुख भोगने वाले हैं, बीते हुए कल में जिनकी वजह से हमने सुख भोगा और आने वाले कल में जिनकी वजह से हम सुख भोगेंगे उन सभी के जीवन को प्यार, आदर सम्मान, विश्वास, देखभाल, नाम, प्रसिद्धि, पैसा; उन्नति, प्रगति, सफलता, शांति, समृद्धि से भर दें।

राम राम २१ सात बार करें।

॥ 卐 ॥

भोग में योग

एक बार ऋषि व्यास ने अपने पुत्र सुखदेव से कहा, 'पुत्र तुम्हें राजा जनक के पास जाकर उनसे भेंट करनी चाहिए, वह ज्ञान के भण्डार है।' पिता की आज्ञा लेकर सुखदेव राजा जनक के पास जाने को उद्दत हुए । वह राजा जनक से ज्ञान अर्जित करना चाहते थे पर उनके मन में उनके ज्ञान को लेकर दुविधा की स्थिति थी । वह राजा जनकके दरबार में पहुँचे जहाँ राजा जनक द्वारा उनका शानदार स्वागत किया गया । सुखदेव ने राजा जनक से कहा, 'राजन मेरे पिता श्री ने मुझे आपके पास ज्ञान अर्जित करने को भेजा है कृपया मुझे अपने ज्ञान के भण्डार से सराबोर करें।' पर राजन एक बात मेरी समझ से परे है कि एक राजा जो धनसंपदा और राजसी वैभव में फँसा है, जो स्त्रियों के संसर्ग में है वह एक उच्चकोटि का योगी कैसे हो सकता है'? इस पर राजा जनक ने कहा, 'पुत्र इस बात पर हम बाद में चर्चा करेंगे, पर यदि तुम मेरे शिष्य बनना चाहते हो तो तुमको एक परीक्षा उत्तीर्ण करनी होगी' कहते हुए उन्होंने एक तेल से भरा हुआ मटका उनके सिर पर रख दिया । फिर वह बोले, 'पुत्र तुम्हें इस तेल से भरे मटके को सिर पर रखकर महल के एक एक कक्ष में जाना है और ध्यान से हर कक्ष का निरीक्षण करना है । ध्यान रहे सिर पर रखे मटके से तेल की एक भी बूँद न छलके, यदि तुमने ऐसा कर दिखाया तो मैं तुम्हें अपने ज्ञान के भण्डार से भर दूंगा।'

राजा के कहे अनुसार सुखदेव ने तेल के मटके से भरा मटका सिर पर रखा और सफलता से अपना कार्य कर दिखाया। कार्य की सफलता के बाद जब सुखदेव राजा जनक के पास पहुँचा तो उन्होंने प्रसन्न होते हुए कहा, 'तुमने परीक्षा उत्तीर्ण कर ली पुत्र अब मैं तुम्हे ज्ञान दूँगा, पर इससे पहले मैं तुमसे एक प्रश्न करूँगा, 'मटका तेल से लबालब भरा हुआ था पर फिर भी बिना एक बूँद तेल गिराए तुम यह कार्य कर पाए इसका रहस्य क्या हैं ? सुख देव ने कहा, 'राजन मेरी आँखें कक्षों का निरीक्षण कर रहीं थीं पर मेरा संपूर्ण ध्यान मटके पर था।' सुखदेव के इतना उत्तर देते ही राजा जनक बोले, 'पुत्र ठीक तुम्हारी ही तरह मैं भौतिक संसार में रहते हुए, जीवन में विभिन्न किरदारों को निभाता हूँ पर मेरा ध्यान निरंतर ईश्वर और मेरे कर्मों पर रहता है और मैं निरंतर ज्ञान अर्जित करते हुए एक योगी का जीवन बहुत ही आसानी से जी पाता हूँ।'

ठीक इसी तरह यदि हम अपने जीवन में मिले प्रति किरदार के लिए ईमानदार रहते हुए आनंद के साथ अपने कर्तव्यों को पूरा करते हैं तो भोग में भी योग को प्राप्त किया जा साकता है।

आशीष जायसवाल को जन्मदिन (१६ फरवरी) पर सुख,शांति,समृद्धि,उन्नति, प्रगट,सेहत,सफलता भरे सप्त सितार जीवन का नारायण आशीर्वाद ।

प्राथमिक इच्छा पूरी करने की तकनीक

हमारी प्राथमिक इच्छा के फलित होने के लिए इंटेंशन के साथ प्रार्थना करेंगे। नारायण ने हमने जो समय दिया है उस समय के भीतर हमारी प्राथमिक इच्छा पूरी कर दी है।

राम राम २१×७ बार

हम अपनी प्राथमिक इच्छा के जल्दी फलित होने के लिए एक और प्रक्रिया का पालन करेंगे। अपनी ब्लेसिंग डायरी या कोई भी नोटबुक ले लीजिए। सबसे ऊपर लिखिए : नारायण आपके आशीर्वाद से हमारी फलीभूत करें प्रार्थनाएँ बुक देखिए । इस बुक में सभी अफ्फर्मेशन दिए हुए है। बुक में बताए अनुसार अपनी प्राथमिक इच्छा लिखिए।

अब लिखिए

१) नारायण आपका असीम धन्यवाद है, असीम धन्यवाद है, असीम धन्यवाद है।

यह स्टेटमेन्ट ५६ बार लिखेंगे। अगर आपके पास समय का अभाव है तो लिखिए

नारायण आपका असीम धन्यवाद है। (५६ बार)

यह स्टेटमेंट ५६ बार लिखने के बाद आपकी विश (इच्छा) दोबारा लिखिए।

जैसेः नारायण आपके आशीर्वाद से हमारे पास प्रचुर मात्रा में धन है, प्रचुर मात्रा में धन है,प्रचुर मात्रा में धन है।

प्राथमिक इच्छा लिखने का सर्वोत्तम समय है शाम ७ बजे के बाद। लिखने का एक ही समय और जगह निर्धारित कर लें। बेहतर होगा आप एक ही साथ पूरी प्रक्रिया खत्म करें। अगर आप ऐसा नहीं कर पाते हैं तो आप इसे टुकड़ों में लिख सकते हैं पर यह २४ घंटे में पूरी होनी चाहिए।

TECHNIQUE TO FULL FILL YOUR PRIORITY WISH

Prayer for our Priority wish with the intention that Narayan has granted our Priority wish within the time requested by us in our prayers.

Ram Ram 21x7

We shall follow one more process to fulfill our Priority wish at the earliest. Take your blessings diary or any notebook. Write on the top Narayan with your blessings. Refer our NRSP book Manifest your prayers All the affirmations are given in the book. Write your Priority wish as per guidance given in the book.

Now put

No.1) Write Narayan apka asim Dhanyawad hai, asim Dhanyawad hai, asim Dhanyawad hai.

(Narayan Thank you very much, thank you very much, thank you very much.)

This statement should be written 56 times.

If you do not get enough time write

1) Narayan apka asim Dhanyawad hai.(56 times).

After writing the above statement 56 times write your wish again.

For example Narayan with your blessings we have abundance of wealth, abundance of wealth, abundance of wealth.

The best time to write your Priority wish is after 7 pm. Fix a place and time for writing .It is better to complete the full process in one sitting, if you are unable to do so you can write in parts ,but it should be completed in a days time.(within 24 hours)

Pavaan Vani

Dear Narayan Premiyon,

|| Narayan Narayan ||

Narayan Reiki Satsang Parivar firmly abides by some principles. One of them is the principle to live every moment in a sense of appreciation. Gratitude and appreciation to nature for whatever it has bestowed upon us. Praise to the Lord who created this universe, by joining atoms together and creating this amazing nature. Praise to the divine Father who has created us. Appreciation for nature that has infused life into an effigy and created the best ever gift to the Universe. It has given us so many beautiful breaths that transmit as wonderful music in rhythm. It has given us a wonderful sight which gives us glimpses of the beauty of nature. We have been bestowed with intelligence to create the attitude of appreciation for this beauty. Awesome speech has been given so that with words one can express love. It has given us beautiful and invaluable hands and feet through which we carry out the service as directed by our wisdom. It has given us beautiful relationships which give us a reason to live life.

It has given us such beautiful trees, plants, flora, rivers, waterfalls, and the sea. Everything is amazing, incredible, and incomparable.

Wherever the vision goes, the mind fills with a sense of appreciation.

Attitude of appreciation is such a wonderful feeling that gives meaning to our life. When we are filled with appreciation, a sense of respect develops in us, when respect develops the feeling of love arises, When love arises, life is full of positivity and when life is filled with positivity, life becomes a seven star.

Wishing you all lead a seven star life,

Best Wishes

R. Modi

R Modi

The Group prayers with Raj didi

Satsangis

Raj Didi's morning prayer time 4.30 am. - 5.30 am. join Didi for your prayers and reap the benefits of Blessings :-

Divine prayers : https://youtu.be/L3lfy-vWTto

|| Narayan Narayan ||

CO-EDITOR
Deepti Shukla 09869076902

EDITORIAL TEAM
Vidya Shastry 09821327562
Mona Rauka 09821502064

Main Office
Rajasthani Mandal Office, Basement Rajnigandha Building, Krishna Vatika Marg, Gokuldham, Goregaon (East), Mumbai - 400 063.

Editorial Office
Shreyas Bunglow No 70/74 Near Mangal Murti Hospital, Gorai link Road, Borivali (W) Mumbai -92.

Regional Office

Amravati - Tarulata Agarwal	:	9422855590
Ahmedaba - C. A. Jaiwini Shah	:	9712945552
Akola - Shobha Agarwal	:	9423102461
Agra - Anjana Mittal	:	9368028590
Baroda - Deepa Agarwal	:	9327784837
Bangalore - Shubhani Agarwal	:	9341402211
Bangalore - Kanishka Poddar	:	70455 89451
Bhilwada - Rekha Choudhary	:	8947036241
Basti - Poonam Gadia	:	9839582411
Bhandra - Geeta Sarda	:	9371323367
Banaras - Anita Bhalotia	:	9918388543
Delhi - Megha Gupta	:	9968696600
Delhi - Nisha Goyal	:	8851220632
Delhi - Minu Kaushal	:	9717650598
Dhulia - Kalpana Chourdia	:	9421822478
Dibrugadh - Nirmala Kedia	:	8454875517
Dhanbad - Vinita Dudhani	:	9431160611
Devria - Jyoti Chabria	:	7607004420
Gudgaon - Sheetal Sharma	:	9910997047
Gondia - Pooja Agarwal	:	9326811588
Gorakhpur - Savita Nalia	:	9807099210
Goa - Renu Chopra	:	9967790505
Gouhati - Sarla Lahoti	:	9435042637
Ghaziabad - Karuna Agarwal	:	9899026607
Hyderabad - Snehlata Kedia	:	9247819681
Indore - Dhanshree Shilakar	:	9324799502
Ichalkaranji - Jayprakash Goenka	:	9422043578
Jaipur - Sunita Sharma	:	9828405616
Jaipur - Priti Sharma	:	7792038373
Jalgaon - Kala Agarwal	:	9325038277
Kolkatta - Sweta Kedia	:	9831543533
Kolkatta - Sangita Chandak	:	9330701290
Khamgaon - Pradeep Garodia	:	8149738686
Kolhapur - Jayprakash Goenka	:	9422043578
Latur - Jyoti Butada	:	9657656991
Malegaon - Rekha Garaodia	:	9595659042
Malegaon - Aarti Choudhari	:	9673519641
Morbi - Kalpana Joshi	:	8469927279
Nagpur - Sudha Agarwal	:	9373101818
Navalgadh - Mamta Singodhia	:	9460844144
Nanded - Chanda Kabra	:	9422415436
Nashik - Sunita Agarwal	:	9892344435
Pune - Abha Choudhary	:	9373161261
Patna - Arvindkumar	:	9422126725
Pichhora - Smita Bhartia	:	9420068183
Raipur - Aditi Agarwal	:	7898588999
Ranchi - Anand Choudhary	:	9431115477
Ramgadh - Purvi Agrwal	:	9661515156
Surat - Ranjana Agrwal	:	9328199171
Sikar - Sarika Goyal	:	9462113527
Sikar - Sushma Agrwal	:	9320066700
Siligudi - Aakaksha Mundhda	:	9564025556
Sholapur - Suvarna Valdawa	:	9561414443
Udaipur - Gunvanti Goyal	:	9223563020
Vishakhapattanam - Manju Gupta	:	9848936660
Vijaywada - Kiran Zawar	:	9703933740
vatmal - Vandana Suchak	:	9325218899

International Office

Nepal - Richa Kedia	:	+977985-1132261
Australia - Ranjana Modi	:	+61470045681
Bangkok - Gayatri Agarwal	:	0066897604198
Canada - Pooja Anand	:	+14168547020
Dubai - Vimla Poddar	:	00971528371106
Sharjah - Shilpa Manjare	:	00971501752655
Jakarta - Apkesha Jogani	:	09324889800
London - C.A. Akshata Agarwal	:	00447828015548
Singapore - Pooja Agarwal	:	+659145 4445
America - Sneha Agarwal	:	+16147873341

Editorial

Dear Readers,

| | Narayan Narayan | |

It was the first day of the New Year. In the New Year I had taken the resolution that I will include morning walk to my regular evening walk schedule. It was 5.45am. The sun was still hidden behind the glowing moon. I wore my walking shoes and with enthusiasm joined my husband for the walk. The small and big plants swaying to the gentle winter breeze gave a unique soothing experience. The white shining light of the lamp post reflecting the black endlessness of the road, like the continuous flow of ink looked beautiful. I casually voiced my thoughts to my husband "Today how beautiful this road, this light, and these swaying trees look". My husband replied with a smile "not only today, but every day they look as beautiful. But because of our hectic lifestyle we forget to appreciate them". Suddenly I realized how true it is that if we forget how precious the life is we have been bestowed with and we often forget to appreciate it. So took a vow that I will develop the habit of appreciating what I have got in this esteemed life.

So Readers, In this issue of Satyug we will understand how to appreciate life.

With best wishes,

Yours own,

Sandhya Gupta

To get

important message and information from NRSP Please Register yourself on 08369501979 Please Save this no. in your contact list so that you can get all official broadcast from NRSP

we are on net

narayanreikisatsangparivar@narayanreiki

Publisher **Narayan Reiki Satsang Parivar,**
Printer - **Shrirang Printers Pvt. Ltd.,** Mumbai.
Call : 022-67847777

॥ 卐 ॥

Call of Satyug

According to the Prakrti Gita from the Narayan shastra, there are 84 lacs evolutions and because of our good karmic balance in our previous evolutions we are blessed with Human body. Even devata (God's) want to experience Human birth. Of course we are thankful for this precious human birth but at times we tend to bicker over small things. It is this complaining nature of ours which deny us the invaluable gifts we are entitled for in this precious birth. It is this denial nature of negating persons, things, emotions, situations which does not allow us to enjoy this beautiful life.

Visualize that moment you opened your eyes for the first time in this world. After living upside down in your mother's womb when you came out straight and took your first breath, was that not beautiful? Didn't your first cry bring a teardrop of happiness? The joy of living in the open air with awareness to your complete existence, that moment was the first moment when you learnt to understand life and to appreciate its existence. Recall your first breath, encompassed by your mothers gentle affection filled touch; remember your mother sleeping on a wet bed and you sleeping peacefully on a dry one. The drops of nectar flowing from your mother's chest, enriching you and slowly helping you grow. Doesn't your head automatically bow down in appreciation of the mother? Recall your father's strong shoulder, sitting on which you considered yourself to be above the whole world. Your parents are the only ones in this whole world whose every breath is powered so that you can live the best of lives. Good food, good clothes, good shoes, good values, good thoughts, everything good only and only because you be blessed with the best of life. Only parents desire that their wards surpass them. Each and every member of the family, contributing towards teaching you lessons of love, support, care and respect, with grandmother telling stories, grandpa playing in the garden with you, uncle and aunt pampering you. Had it not been for them would you have been what you are today? Don't you feel like appreciating them? School teachers, your close friends who celebrated your achievements and at times fought with you over your mistakes, some have overtaken you, some have lagged behind you, but everyone has filled your life with precious treasure of sweet memories. Don't you feel like appreciating those golden memories?

Good food to eat, cool water to drink, does it not ever enter the mind to appreciate this earth, the vegetation, the trees, the plants, the fruit-laden branches, the food plate served by the mother, the potable water, the rivers the lakes, the sea? If yes, then why not appreciate? Why is the water getting dirty? Why is there a shortage of food? Why are we being judgmental, he is not good, etc. - etc. We are hiding the feelings of appreciation within us in the blanket of the hollow complaints.

When you see a homeless dosen't your heart automatically go out to appreciate your own small but strong shelter. Till yesterday the walls of your house which seemed listless, like a torn poster, which used to make you angry and disturb you when you compared it with a rich man's mansion, doesn't that exasperation transforms to gratitude and appreciation when you see the homeless sleeping on the street. Automatically your head bows in reverence to the Divine. Doesn't life seem like a celebration? Why then only for that moment? Why can't we appreciate life every moment? There are so many in the World for whom our life is a dream and there are many whose life is a dream for us. But that dream will manifest only when we have the sense of appreciate and the

emotion of gratitude for those dreams. Attitude of appreciation, a feeling of respect, a sense of gratitude, opens the doors of abundance in life. Appreciate everything you have in life, appreciate every relationship, every feeling, everything in every situation and have a attitude of gratitude and see how life becomes a melodious song.

The habit of appreciating and applauding is such an attitude which we can easily develop in one but the need is just to change our perspective. Rajdidi says "Change your view, your view point will change". Once you get into the habit of appreciating life, see how life changes. Appreciate the gentle blowing wind, the swinging trees, the dancing flowers spreading its fragrance, flowing rivers, every person coming into your life ,the habit of appreciating every situation, then you will see how automatically every word which is spoken is words of appreciation, words of applause. Now the question comes, how to develop this habit of appreciation? Make some small changes within yourself and see how easily you develop this habit of appreciation in your life:-

1) As soon as you wake up in the morning, appreciate your breath, which is bringing to you another day of life. If this breath was not there, you would have seen another day? Let us thank the divine energy while taking a deep breath.
2) Appreciate every small thing in your life which is making your life easy.
3) Give reverence to elders and show affection to those who are younger or of your same age.
4) With laughter, appreciate the differences because these are the ones who give you and your thoughts, the right direction.
5) Experience the sunlight and the feel coolness of the moon. Connect to nature.
6) In order to move ahead in life, it is necessary to look up to those who are above you in stature, but for the satisfaction and joy in life, it is also necessary to see the lives of those people who are below you in stature and living in unfavorable conditions.
7) If you are dissatisfied with your relationships, then look at those who do not have any relationships, the feeling of appreciation of the relationship will develop on its own.
8) Learn to respect your own self, your qualities, and your emotions. This attitude of respect will easily develop the attitude of appreciation in you.
9) Remember these lines of prayer taught by Didi, we are blessed, we are lucky; we have Narayan's infinite blessings on us, blessings on us, blessings on us. These are such miraculous words that awaken inside you the thought that life is precious and is to be appreciated.
10) Always remember that your life is so precious that even the Gods want it, but it is the grace of that Supreme Father that we have been blessed. If you remember this every moment from the bottom of your heart then only words of appreciation will come out.

Narayan divine blessings with Narayan Shakti to Reshma Heda on her birthday (2nd February) for a seven star life and success in all spheres.

Wisdom Box
(Glimpses of Satsang)

卐

Didi gave simple measures to achieve internal peace:-

1) Adopt hard work and honesty in your life.

2) See yourself only as a medium, the doer is God.

3) See Narayan in every living being, surrender to God and chant his name (do jaap) even while performing worldly duties.

4) Narayan has chosen us as the medium to play a role in the world created by him. Narayan is the doer and our Guide, we are just a medium.

5) We are just an instrument, which Narayan uses to help someone when needed.

6) If you do good for someone, it is good, but if after doing good you forget it, that is best. Instead of expecting that others oblige you, understand that the work was destined to be good. You are chosen by Narayan only as a medium to complete the work in best manner.

7) We are just a medium to do any work, whatever good work is done by us, is due to divine grace. This thought will make you humble. The other person will also not be under any kind of obligation to you.

8) Whenever you help someone, he will help someone else in return. So keep moving the chain of helping each other. Do not force any other person to do it. When you continue to do good work, you will get your desired thing in multiples at the time, when you the need most.

9) Always inspire others to give and help others from whatever resources they have. Since we are born, we are taking everything from the society, we should not be selfish. We should return it. We should rise above the concept of "Me and my family". All religions promote charity. What is the secret behind this? Our elders also inspired us to donate.

10) When you donate, you realize that you have abundance of wealth, when this feeling converts to faith you attract abundance.

11) When you give something, it comes in manifold multiples. According to Narayana Shastra, if you give one, it comes back in 11times multiples.

12) Some religions believe that when you give you get multiples (kan dein aur Maan paye), you feel good when you give.

13) You feel satisfied that when someone needed your help, you were there to help him, even if he was a stranger to you.

14) You feel happy because your hard earned money is used for good work.

15) What is the difference between confidence and will power?

Ego + confidence together lead to overconfidence.

Increased self-confidence is willpower. When you give someone something that makes you feel good, you get a smile on your face. Your self-confidence increases and your will power are strengthened.

16) "Feel good vibrations" have the power to cure even the incurable diseases.

When these positive vibrations come out of your body, they attract good things and good people in your life. Just like exercise makes muscles strong. Willpower makes our mental muscles strong.

17) When you are the reason of smile on someone's face,

your confidence improves and your power and energy levels improve.

18) Didi shared a beautiful and simple method to enhance the habit of "giving". Didi said that we should always keep a pouch of coins and give it to the vegetable vendors, rickshaw pullers, grocery vendors with best wishes and blessings for abundance.

19) The secret of the happiness of a joyous person is his prayers for everyone. When we pray we get multiple blessings from the universe.

20) The scriptures say, "Atithi Devo Bhava:" firstly the guests are not impressed by your wealth and status; they are pleased by your smile and warm welcome.

21) Narayana Shastra says that the way you see a guest, his vibrations will work in that direction. If you see the guest as The Divine, then you get blessings of happiness peace and prosperity.

If you consider him unwanted then the same arrangement is done for you.

Narayan divine blessings with Narayan Shakti to Ranjita Malpani for earning jackpot amount in multiples of Rs.56 crore every month.

Narayan divine blessings with Narayan Shakti to Santosh Ladha on her birthday (8th February) for a seven star life and success in all spheres.

Youth Desk

Appreciate life

The only planet where life exists is earth and we human beings are blessed to be born on it to experience the abundance of this planet. Life exists in various forms and each and every entity of Universe is of significance and needs to be appreciated, the earth, air , water , space , clouds, animals and plants to name a few. The list is endless and as ecology suggests, we are interdependent on each other. Based on this, we need to value and appreciate each and everything we are blessed with in our life .

Appreciation is a quality which is instrumental in generating positivity. Let us take the example of a small child who tries to take baby steps- when we clap and appreciate the effort of the child, he regains the enthusiasm of getting up and trying it again. Not only human beings but also non living too loves appreciation. Recently there was a sharing by a lady from Australia who used to say to her car that - You are my best companion, I love you and you always stay with me. Once when she met with an accident and applied for insurance of the car, she got an amount which was double the value of car and as a bonus the insurance company left the car with her which she got repaired and is still using it.

Appreciation stimulates the flow of feel good hormones in the person appreciating as well as the appreciated one. While doing so, one highlights the good qualities of person which automatically attracts improvement in other spheres too!

Eg: The Performance awards which are given to appreciate the employees in various companies are a manner of appreciation which motivates the employees to outperform and give better results.

Appreciation has the power to invoke the positive energy of every atom of the universe so why not appreciate every minuscule thing we are blessed with.

Ask a person, the value of eyes, who cannot see,
Ask a person, the value of ears, who cannot hear,
Ask a person, the value of speech, who cannot speak,
Ask a person, the value of home, who does not have any shelter,
Ask a person, the value of water, who stays in desert,
Ask a person, the value of family, who is an orphan.

We are indeed lucky to have innumerable blessings in form of Good health, wealth, happy harmonious relationships, wonderful family, the marvelous natural beauty spread all around and above all the blessings of a new day which gives us opportunities to enjoy and appreciate the abundance we are blessed with.

Voltaire said - "Appreciation is a wonderful thing. It makes what is excellent in others belong to us as well."

Children's Desk

Improvisation is an inherent human quality. This quality showcases itself when any challenging situation arises.

If the rains are in excess inconvenience is caused. If the summers are prolonged again ways and means have to be thought how to overcome the water shortage and the heat. Rain water harvesting is a technique of harvesting the excess rains, solar energy, and wind energy can be harnessed to support the nonrenewable sources energy. These techniques are devised because humans appreciate and accept the conditions and work and develop ways and means to improvise life. This issue of Satyug is dedicated to guiding readers to Appreciate Life, in every situation.

This Lockdown has taught us a lesson in optimism and positivity. We have seen being positive has helped many to overcome and battle the virus and keep it at bay too. Because of positivity people have overcome economic challenges and emerged a winner with new ideas and business trends blossoming.

Rajdidi says that whatever situation life throws at you, if you accept the situation, appreciate the resources you have and use them with wisdom you will emerge a winner.

In the present scenario, the Zoom, the Microsoft, the google class rooms have brought people closer. Though physically we were not meeting it was fun having classes virtually, attending office virtually even satsangs are conducted virtually with a million more people getting associated.

The Ramayan says 'ईश्वर के हर विधान में मंगल विधान है'. The Bhagwat Gita says जो हुआ अच्छा हुआ और जो होगा अच्छा होगा, all that is happening is Good, all that has happened is good, all and all that will happen will be Good.

Then why not just appreciate whatever we have and being contended work towards higher goals.

As sparkling stars, with Exams around the corner, instead of complaining about the shortcomings of online classes let's show gratitude to the school authorities for providing us a online learning platform. Lets us express gratitude to parents for supporting. Let us work more hard. Things will work out for the best.

Gratitude and Smile are the two precious ornaments which take you forward towards achieving your goals.

We are blessed with Life So, Lets appreciate it.

Under The Guidance of Rajdidi

Under the aegis of the Narayan Reiki Satsang Parivar, Raj Didi has given such a simple technique by the medium of Narayan Reiki and Narayan prathana following life is made easy for all. Some such experiences: -

Rajesh Shah (Canada): - I live in Canada. I am a Reiki Channel and practice Narayan Reiki regularly. Recently I experienced jack pot results. I met Raj Didi at a zoom meeting. Before the zoom meeting, my eyes were very red due to the high blood pressure. Didi conducted group health prayers in the zoom meeting. When the meeting concluded, to my surprise my eyes which earlier were red were absolutely normal. Such an unprecedented result of prayers further strengthened my faith in my Narayan Reiki prayers. Thanks to didi from the bottom of my heart.

Sweety (Nepal): - I am from Nepal. I do regular prayers and Narayan reiki healing. One day I went for shopping. I forgot my very precious sunglasses at a shop. But I did not realize that. When I went back to that shop after a week, the shopkeeper returned my glasses to me. I got my precious glasses back by the grace of Narayan. I strongly believe that Narayan is with you every moment and protects you every moment.

Purvi Dalal: - I am a Reiki Channel. My mother was on Total Bed Rest due to fracture. I took the affirmation for healing from the Book Of Affirmations and started healing my mother with bone and other symbols. The Mumbai prayer centre also was giving her regular healing. Our constant prayers had the effect that my mother's recovery was very good. By the date line we had put in the prayers, my mother was completely healthy and started walking without any support. Thank you Narayan. Thank you Raj Didi.

Mandeep (Delhi): - I have recently learned Narayan Reiki. We have been taught a symbol Narayan Kawach which is used to protect and secure everything. I went to the market the other day, and as directed I made on my purse. I bought the eye drop which was priced at Rs173 but the shopkeeper gave me a discount and took only Rs 25 rupees. When I went to buy the hair spray, it was priced at 400 rupees but there was a 50% sale was going on in the shop and I got that spray for 200 rupees. Thank you to Raj Didi for giving such a wonderful symbol for protecting our wealth. Thank you Rajdidi from the bottom of my heart.

Ocean Of Wisdom

Sage Vyasa once told his son Shukadev, “My son, you should go meet King Janaka, he is an ocean of wisdom, and it will help you.”

Though Shukadev was keen to learn from him, he was doubtful of the knowledge of King Janaka. He reached the Palace where he was welcomed by the King and Shukadev said: “My father sent me to you, to learn higher spiritual knowledge, please take me as your student. But, I must ask you a question. I don’t understand how can a palace dwelling king who indulges in the wealth, in the company of women be such a highly recommended Yogi?’”

To this, Janaka answered, “We will talk about that later but if you want to be my student, you have to pass a test. Take this cup of oil and keep it on your head. Go around the palace and keenly observe every room. I will need every detail from you, but remember you shouldn’t spill even a drop of this oil if you want to be my student.”

Shukadev did as asked. King Janaka asked many questions to confirm if he had indeed completed his task without fail. King Janaka got impressed by Shukadev and asked him how he managed to do that? “I observed every room, but my focus was always on the cup,” said Shukadev. To this King Janaka answered the query of Shukadev, “Same way, though I live in this world performing my duties as a king, husband, father, I always keep my focus on God and Karma.”

Moral: Live a worldly life but never forget your spiritual path.

Humanity

Once upon a time, there was a man who was very helpful, kindhearted, and generous. He was a man who will help someone without asking anything to pay him back. He will help someone because he wants to and he loves to. One day while walking into a dusty road, this man saw a purse, so he picked it up and noticed that the purse was empty. Suddenly a woman with a policeman shows up and gets him arrested.

The woman kept on asking where did he hide her money but the man replied, “It was empty when I found it, Maam.” The woman begged, “Please give it back, it’s for my son’s school fees.” The policeman also supported the women and ordered the man to return the money. God knows what the man felt; he emptied his pocket of all the money and gave it to the women. “ The woman left .The woman returned home and when she counted her

money it was doubled, she was very happy. The next day while the woman was going towards the school to pay her son's school fees, she noticed a man with a blanket over his head following her. She thought that he wanted to rob her, so she approached a policeman standing nearby. He was the same policeman, whom she took along to inquire about her purse. The woman told him about the man following her, but when the police man caught the man, his blanket fell. He was the same man who had returned the money to the lady. When the policeman questioned as to why he was following her. The man replied "Yesterday I saw how desperate this lady was for her money. I did not want anyone else to rob her of her money again today."The woman's head bowed down in reverence to the man. She realized that the money that the man had returned to her yesterday was the man's own money which he had returned to her on humanitarian grounds seeing her desperation, seeing her helplessness. Continuous tears started flowing from the woman's eyes.

Moral: Life gives you strange experiences, sometime it shocks you and sometimes it may surprise you. We end up making wrong judgments or mistakes in our anger, desperation and frustration. However, when you get a second chance, correct your mistakes and return the favor. Be Kind and Generous. Learn to appreciate what you are given.

KARMIC HEALING: - WITH SOME CHANGES

Your Left hand energy goes to :-" Thank you Narayan for always being with us. In your presence I am/We are seeking blessings with chanting for those persons for whom knowingly or unknowingly I/ We have hurt with our negative thoughts, words and deeds and I/We are asking for forgiveness from them. And also we are forgiving those who have hurt us with their negative thoughts, words and deeds. We are praying to Narayan that all of their lives be blessed with happiness, peace, prosperity, love, respect, faith, care, name, fame, money, growth, progress and success and manifest all their wishes.

Your Right hand energy goes to:-Prayers to Narayan that because of whom we are enjoying happiness today, in the past, because of whom we have enjoyed happiness and in the coming future, because of whom we will enjoy happiness, fill all their lives with love, respect, trust, care, name, fame, money, growth, progress, success, peace, prosperity.

Ram Ram 21, 7 times

KUSUM

Today was the first day of college. All the students were very excited. It was then the professor entered the class and after the customary introductions kept a very unique proposition. He said we should introduce our self to such a person in the class whom we have never met before.

I stood up to look around when a gentle hand touched my shoulder. I turned around and was shocked. Where in the commerce class all the students were of my age what was this 80 year old doing. She confidently gave me a beaming smile and with great enthusiasm said, “Hi handsome. My name is Kusum.. Can I give you a hug?”

I laughed and enthusiastically responded, “Of course you may! You are my grandmother’s age”. Kusum replied “I am not your grandmother though; I am your friend Kusum. Will you be my friend! God knows why but the sweetness of her voice made me respond to her request of friendship in affirmation and I hugged Kusum tightly. Friendly I jokingly asked “Why are you in college at such a young, innocent age?”

She jokingly replied, “I’m here to meet a rich husband, get married, and have a couple of kids”. “No seriously,” I asked. I was curious what may have motivated her to be taking on this challenge at her age.

“I always dreamed of being a commerce graduate and now I’m getting one!” she told me. I was little taken back but loved conversing with her.

After class we walked to the canteen and shared a chocolate milkshake. We became instant friends. Every day for the next three months, we would leave class together and Kusum would talk nonstop. I was always mesmerized listening to this “time machine” as she shared her wisdom and experience with me and her representation of date and time were just amazing.

Over the course of the year, Kusum became a campus icon and she easily made friends wherever she went. Whenever the professor was absent, the students would surround her and listen to her experiences and enjoy. Kusum reveled in the attention bestowed upon her from the other students. She was living it up.

There were times when we would pull her legs and at times she will pull ours. There was no generation gap between us, we were all friends. One of the days we all bunked the

lecture of our account professor and she took us for the movie "Dilwale dulhania le jayenge." When the professor confronted her she stood so innocently in front of him that the entire class and the professor burst out laughing. Many a times she was caught with cheat slips during examination. Her reply would be "professor I cheat only in the B Com exam, in the exam of Life I am a top notch. The semester got over successfully. In our college a program is arranged at the end of every semester called "speak your mind" in which the students are asked to speak on the stage.

Kusum was introduced and fumbling she stepped on the stage. She was looking ravishing in her high heel and one piece dress. She started her speech with "sorry I got delayed because had to give extra time for makeup". The hall roared.

Then clearing her throat she spoke "Friends, we don't grow old, our body grows old. And you know why? We forcefully add years to it and forget to smile, Forget to live, forget to enjoy, forget to dance and sing. Happily performing our responsibilities we immerse ourself so much so that we become so serious that our desires our innate happy character gets lost. What will people say, what will people think, this line of thought makes us artificial. While being alive we kill our innate character. At what age what you should do? In which scripture in the world is it written? It is our life and we are free to live according to ourselves. Freedom always leads to progress, leads to prosperity leads to discipline. Anyone can attain any height; you only should have the passion. While taking their last breadth people are not as happy about their achievements as much regrets they have for all they were unable to do in this precious invaluable life. Your last breath should be one of appreciation and not filled with regrets.

The entire hall which was silently hearing Kusum reverberated with applause.

Kusum graduated with a first class. One week after graduation Kusum died peacefully in her sleep.

The entire college and its faculty shed tears for this great soul. She had taught all of us a new meaning of living Life.

Narayan divine blessings with Narayan Shakti to AASHISH JAISWAL on his birthday (16th February) for a seven star life and success in all spheres.

Narayan Geet

Narayan Narayan ka udghosh jahan
Ram Ram madhur dhun vahan
Sabko khushiyan deta aparam paar
Jeevan mai lata sabke jo bahaar
Khole unnati, pragati, safalta ke dwar
Banata Satyug sa sansar
Wo hai wo hai hamaara Narayan Reiki Satsang Parivar
Hamara NRSP Pyara NRSP,Nyara NRSP
Pyar, adar, vishwas badhata
Rishton ko majboot banata,majboot banata,
Paropkar ka bhav jagata
Sachhayee, namrata, seva mei vishwas badhata
Sat ko karta angikar
Banata Satyug sa sansar
Vo hai, vo hai,hamara Narayan Reiki
Satsang Parivar
Satsang Parivar
Muskan ke raj batata
Tan, man, dhan se dena sikhlata
Humko jeen sikhlata
Ghar ghar prem ke deep jalata
Man, kram se jo hum dete hai
Vahi lout kar aata, vahi lout kat aata
Banata Satyug sa sansar
Vo hai, vo hai hamara Narayan Reiki Satsang Parivar
NRSP, NRSP

Finest Pure Veg Hotels & Resorts

The Byke

A HOTEL RETREAT

EAT GREEN • STAY EVERGREEN

Our Hotels : Matheran | Goa | Manali | Jaipur | Thane | Puri | UPCOMING BORIVALI (Mumbai)

THE BYKE HOSPITALITY LIMITED

Shree Shakambhari Corporate Park,Plot No.156-158,

Chakravati Ashok Complex, J.B.Nagar, Andheri (East), Mumbai - 400099.

T.: +91 22 67079666 | E.: sales@thebyke.com | W.: www.thebyke.com